eISSN:2581-4885
DEV SANSKRITI VISHWAVIDYALAYA PUBLICATION

RESEARCH ARTICLE

पंच महायज्ञ – आध्यात्मिक परामर्श की एक विधा (Panch Mahayagya – A Mode of Spiritual Counselling)

आरती कैवर्त [1*], सतीश चन्द्र कैवर्त [2]

[1] वैज्ञानिक अध्यात्मवाद विभाग, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, भारत
[2] दर्शन विभाग, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, भारत

सारांश: सनातन हिन्दू धर्म में यज्ञ का बड़ा महत्त्व माना गया है, यज्ञ भारतीय संस्कृति का आदि प्रतीक है। यज्ञ के बिना हमारे दैनिक जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। महर्षि दयानन्द ने दैनिक जीवन को सफल बनाने के लिए पञ्च महायज्ञ को आवश्यक बताते हुए विस्तार से इसका वर्णन सत्यार्थप्रकाश में किया है। मत्स्य पुराण में भी कहा गया है कि निष्काम भाव से यज्ञ करने वाले को निश्चय ही परब्रह्म की प्राप्ति होती है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार पञ्च महायज्ञ करते हुए यज्ञशिष्ट भोगकर, निष्पाप और भगवद् प्राप्ति योग्य बना जा सकता है। मनुस्मृति के अनुसार गृहस्थाश्रम में दैनिक कार्यों को करते हुए मनुष्य जाने–अनजाने पापकर्म कर बैठता है जिसका प्रायश्चित सत्कार्म्रों के द्वारा संभव है इन सत्कर्मों को ही मनु ने पञ्च महायज्ञ कहा है। अतः प्राणियों के लिए यह अति आवश्यक है। इसी प्रकार आध्यात्मिक परामर्श की विधा आंतरिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करती है और पञ्च महायज्ञ की प्रेरणाएं आध्यात्मिक परामर्श के रूप में व्यक्तिगत विकास, उपचार और आस–पास की दुनिया की बेहतर समझ की दिशा में मार्गदर्शन करती है। पंडित श्री राम शर्मा आचार्य जी ने अपने कई साहित्यों में, वांगमय में एवं अखंड ज्योति मासिक पत्रिका के कई अंकों में पञ्च महायज्ञ का वर्णन किया है, यज्ञ पिता गायत्री माता कहकर इसे मानवीय जीवन की आवश्यकता बतलाया है।

कूट शब्द: पञ्च महायज्ञ, आध्यात्मिक परामर्श, यज्ञ, श्री राम शर्मा आचार्य

*CORRESPONDENCE
Address Department of Scientific Spirituality, Dev Sanskriti University, India
Email: aarti.kaiwart@dsvv.ac.in

PUBLISHED BY
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya Gayatrikunj-Shantikunj Haridwar, India

OPEN ACCESS
Copyright (c) 2024 Aarati Kaiwart and Satish Kaiwart
Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

प्रस्तावना

यज्ञ भारतीय संस्कृति का एक ऐसा सार्वभौमिक प्रक्रिया है जि–सके माध्यम से भौतिक सम्पदा से लेकर अध्यात्मिक सम्पदा, शारीरिक स्वास्थ्य से लेकर मानसिक स्वास्थ्य भी प्राप्त होने का वर्णन मिलता है शतपथ ब्राह्मण [1] में भी समस्त का–मनाओं की पूर्ति के लिए यज्ञ अनुष्ठान किये जाने का वर्णन मिलता है।

व्यक्तिगत जीवन के उत्कर्ष, सामाजिक जीवन के परि–ष्कार, और समस्त राष्ट्र को उन्नत बनाने के उद्देश्य से किये जाने वाले यज्ञीय प्रयोगों का वर्णन अनेक ग्रंथो में मिलता है, जैसे – तप यज्ञ, वाणी यज्ञ, स्वाध्याय यज्ञ, ज्ञान यज्ञ, ब्रह्म यज्ञ, राजसूय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ आदि। यज्ञों में भी पञ्च महा–यज्ञ के विधान का वर्णन अनेको ग्रंथो में मिलता है इसे विशेषतः गृहस्थ जीवन से सम्बंधित कहा गया है [2] । वैदिक संस्कृति में पञ्च महायज्ञ साधना सर्वश्रेष्ठ साधना कही गयी है, जिसके माध्यम से मानव सहज ही धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। महर्षि दयानन्द ने दैनिक जीवन को सफल बनाने के लिए पञ्च महायज्ञ को आवश्यक बताते हुए विस्तार से इसका वर्णन सत्यार्थप्रकाश में किया है। [3] मत्स्य पुराण में भी कहा गया है कि निष्काम भाव से यज्ञ करने वाले को नि–श्चय ही परब्रह्म की प्राप्ति होती है। [4] पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार पञ्च महायज्ञ करते हुए यज्ञशिष्ट भोगकर, निष्पाप और भगवद् प्राप्ति योग्य बना जा सकता है। [5] मनुस्मृति के अनुसार गृहस्थाश्रम में दैनिक कार्यों को करते हुए मनुष्य जाने–अनजाने पापकर्म कर बैठता है जिसका प्रायश्चित सत्कार्म्रो के द्वारा संभव है इन सत्कर्मों को ही मनु ने पञ्च महायज्ञ कहा है। [6] अतः प्राणियों के लिए यह अति आवश्यक है।

श्रीमद् भगवद्गीता में यज्ञ की महत्ता का विस्तार से वर्णन करते हुए कहा गया है कि सृष्टि का जन्म ही यज्ञ के माध्यम से हुआ है। राजा दक्ष ने यज्ञ विध्वंस होने और पुत्री सती को खोने के प्रायश्चित्त के रूप में भी विराट यज्ञ को संपन्न किया, जिसे मन के विक्षोभ और ग्लानी भाव को दूर करने के लिए राजा दक्ष द्वारा किया गया। ऐसे विभिन्न प्रसंगों में यज्ञों की महिमा से वेद, उपनिषद्, दर्शन और पुराणों के पन्ने भरे पड़े हैं। शुक्लयजुर्वे–दसंहिता के श्लोकों में यज्ञ के माध्यम से विभिन्न देवों से मेधा और सद्बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना करने का वर्णन मिलता है। [7]

मानव जीवन जितना हम जानते हैं उससे कहीं अधिक जटिल है। यह सार्वभौमिक और व्यक्तिगत ऊर्जा प्रणालि–यों, कर्म संबंधी परस्पर क्रिया– प्रतिक्रिया, जागृति की चेतन, अवचेतन और अतिचेतन अवस्थाओं और आध्यात्मिक अनु–भवों का एक अत्यधिक जटिल जाल है, जिसमे सभी एक में गुंथे हुए हैं। [8] मनुष्य प्राचीन काल से ही ऐसे विभिन्न चुनौती पूर्ण परिस्थितियों में अपने बड़ों से परामर्श प्राप्त करते रहे हैं। इस दृष्टि से परामर्श का एक परम्परागत रूप प्रकट होता है। परामर्श का उद्देश्य व्यक्ति की समस्याओं के समाधान में उसकी सहा–यता करना है जब कोई व्यक्तियों की आत्म निरीक्षण में सहायता करते हुये उसे अपनी समस्या का स्वयं समाधान करने योग्य बनने में सहायता करते हैं तो यह कार्य परामर्श कहलाता है। [9] प्राचीन काल से ही परामर्श मानव समाज में किसी–न–किसी रूप में विद्यमान रहा है। [10] माता पिता द्वारा पुत्र को दिया परामर्श हो, या राजगुरु द्वारा दिया गया राजकीय परामर्श, गुरु का शिष्य को दिया गया परामर्श हो, या कुरुक्षेत्र मे खड़े अर्जुन को श्री कृष्ण के द्वारा दिया गया आध्यात्मिक परामर्श।

आध्यात्मिक परामर्श व्यक्ति के जीवन की समस्याओं से उबारने करने के लिए पारंपरिक मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के साथ–साथ विभिन्न आध्यात्मिक उपकरणों का उपयोग करता है। इन्हीं आध्यात्मिक उपकरणों में से एक श्रेष्ठ माध्यम यज्ञ विधान भी है, जिसमें न केवल क्रिया विधि ही प्रभावी है अपितु इसमें निहित भाव भी प्रधान भूमिका निभाती है।

यज्ञ केवल एक अनुष्ठान नहीं बल्कि एक जीवन पद्धति है। [11] यज्ञ की वास्तविक भावना यज्ञीय जीवन शैली को अपनाना है। आदर्श मानव जीवन जीने के लिए यज्ञ ही केंद्रीय दर्शन है। कहा गया है कि यज्ञ करना जीवन जीने की कला का अभ्यास करने जैसा है। जिस प्रकार छोटे बच्चों को फ्रेम (अबेकस) पर टिकी हुई छोटी–छोटी रंगीन गेंदें देकर गिनती सिखाई जाती है, उसी प्रकार यज्ञ–पूजन का परिदृश्य भी एक उदाहरण है जो लोगों को दिखाता है कि जीवन को यज्ञीय विचारों और भावनाओं के आधार पर यज्ञीय गतिविधियों में शामिल होकर, दूसरों की स्वेच्छा से सेवा करते हुए जीना चा–हिए। [12] पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने युग यज्ञ पद्धति में सूत्र पद्धति के माध्यम से यज्ञीय जीवन शैली के लिए एक नैतिक शिक्षा के रूप में यज्ञ के एक अलग परिप्रेक्ष्य पर प्रकाश डाला। प्रत्येक अनुष्ठान के अंतर्निहित दर्शन को महत्व दिया है। [12]

वर्त्तमान समय में शहरी सन्दर्भ में जीवन की गति में निरंतर वृद्धि हो रही है जिसके कारण पारिवारिक विघटन, सामाजिक धार्मिक विभाजन की स्थिति उत्पन्न हो गई है जिससे मनुष्य निराशा और हताशा में घिर गया है इन समस्याओं का सामना करने के लिए प्रत्येक को सहायता और परामर्श की आवश्य–कता होती है। ऐसे में जो लोग किसी उच्च शक्ति या मार्गदर्शक में विश्वास करते हैं, आध्यात्मिक परामर्श चिकित्सा इस शक्ति के साथ उनके संबंध को गहरा करने में मदद कर सकती है, या यह संबंध उनकी व्यक्तिगत उपचार प्रक्रिया में सहायता के रूप में कार्य कर सकता है।

करिन ब्लीकर के अनुसार [13] आध्यात्मिक परामर्श उपचार का एक ऐसा तरीका है जो किसी व्यक्ति की मान्यताओं और मूल्यों को देखता है। अध्यात्मिक परामर्श के द्वारा परामर्श दाता अपने विश्वास को व्यक्ति पर आरोपित न कर उसके स्वयं के मूल्यों एवं विश्वास के द्वारा उसके समाधान को पाने में उसका सहयोग करने का प्रयास करता है। जिसके द्वारा परामर्शी अपने तनाव से राहत, आत्म–करुणा की भावना, प्रेमपूर्ण दयालुता, खुशी, समता, अंतर्दृष्टि, अशांत समय में भी शांति पाने की

क्षमता और जीवन का अर्थ और उद्देश्य खोजने की क्षमता प्राप्त कर सकता है ।

आध्यात्मिक परामर्श का उद्देश्य अपराध, अवसाद, भय, बचाव, आघात, तनाव, फोबिया सहित चिंता विकार, भावनात्मक संकट, वैवाहिक समस्याएं, पारिवारिक विवाद, व्यसन, मध्य जीवन संकट, बचपन के घाव और दुर्व्यवहार, पिछला जीवन और कर्म, व्यवहार संबंधी मुद्दे समाधान पाना है ताकि एक व्यक्ति स्वयं के साथ, अपने मूल्यों और संस्कारों के साथ फिर से जुड़ सके। [14] आध्यात्मिक परामर्श, जिसे आत्मा-केंद्रित विधा के रूप में भी जाना जाता है, एक गतिशील और शक्तिशाली प्रक्रिया है जो मानव अनुभव के अंतर्संबंध का सम्मान करती है। और जो हमें व्यक्तिगत विकास, उपचार और स्वयं और हमारे आस-पास की दुनिया की बेहतर समझ की दिशा में मार्गदर्शन करती है। आध्यात्मिक परामर्श [15] एक परिवर्तनकारी अभ्यास है जो किसी व्यक्ति के जीवन के आध्यात्मिक आयामों पर ध्यान केंद्रित करता है। गहरी बातचीत, आत्मनिरीक्षण और मार्गदर्शन के माध्यम से, यह व्यक्तियों को उनकी आध्यात्मिकता से जुड़ने और जीवन में स्पष्टता, उपचार और संतुष्टि की एक बड़ी भावना खोजने में मदद करता है।

आध्यात्मिक परामर्श किसी व्यक्ति के जीवन के आध्यात्मिक आयामों की खोज और समाधान पर अधिक जोर देता है। यह किसी की भलाई में आध्यात्मिकता के महत्व को पहचानता है और इसका उद्देश्य आस्था, अर्थ और उद्देश्य के मामलों में मार्गदर्शन और समर्थन प्रदान करना है। आध्यात्मिक परामर्श में मन, शरीर और आत्मा के अंतर्संबंध को स्वीकार करते हुए मानव अस्तित्व का व्यापक दृष्टिकोण शामिल है। आध्यात्मिक परामर्श की विधा आंतरिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करती है और पञ्च महायज्ञ की प्रेरणाएं आध्यात्मिक परामर्श के रूप में व्यक्तिगत विकास, उपचार और आस-पास की दुनिया की बेहतर समझ की दिशा में मार्गदर्शन करती है। [16]

मनुस्मृति [17] के अनुसार घर में पांच ऐसे स्थान है जहाँ पर जाने अनजाने जीवहिंसा की सम्भावना बनी रहती है- चूल्हा, चक्की, बुहारी, ओखल और जल का घड़ा। ऐसे में इस जीवहिंसा के पाप से प्रायश्चित का विधान पञ्च महायज्ञ को बताया गया है। ये पञ्च महायज्ञ हैं [18] - ब्रह्मयज्ञ (स्वाध्याय, ज्ञानयज्ञ), देवयज्ञ (होम, पर्यावरण संरक्षण), पितृयज्ञ (पिंडक्रिया या माता पिता की सेवा), भूतयज्ञ (बलि वैश्वदेव, जीवदया), अतिथियज्ञ (अतिथि की सेवा)।

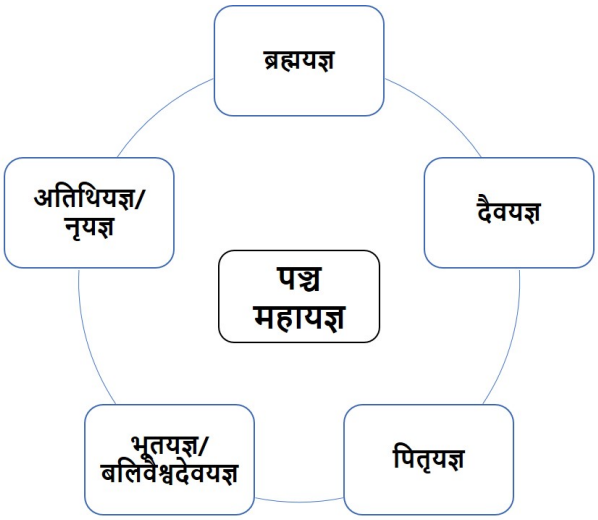

चित्र 1: पञ्च महायज्ञ

ब्रह्मयज्ञ

जड़ और प्राणी जगत से बढ़कर है मनुष्य। मनुष्य से बढ़कर है पितर, अर्थात माता-पिता और आचार्य। पितरों से बढ़कर हैं देव, अर्थात प्रकृति की पांच शक्तियां, देवी-देवता और देव से बढ़कर है- ईश्वर और हमारे ऋषिगण। ईश्वर अर्थात ब्रह्म। यह ब्रह्म यज्ञ संपन्न होता है नित्य संध्यावंदन, स्वाध्याय, अध्यापन तथा वेदपाठ करने से। शतपथब्राह्मण [19] के अनुसार स्वाध्याय में वेदों सद्ग्रन्थों का वाचन और मंत्रो का जप अर्थात् उपासना, सम्मिलित है। इसके करने से ऋषियों का ऋण अर्थात 'ऋषि ऋण' चुकता होता है। इससे ब्रह्मचर्य आश्रम का जीवन भी पुष्ट होता है।

देवयज्ञ

याज्ञवल्क्यस्मृति [20] में कहा गया है जो सत्संग तथा अग्नि-

होत्र कर्म से सम्पन्न होता है वह देवयज्ञ है। इसके लिए वेदी में अग्नि जलाकर होम किया जाता है यही अग्निहोत्र यज्ञ है। यह भी संधिकाल में गायत्री छंद के साथ किया जाता है। इसे करने के नियम हैं। इससे 'देव ऋण' चुकता होता है एवं वातावरण–शुद्धि व स्वास्थ्य–लाभ होता है।

पितृयज्ञ

सत्य और श्रद्धा से किए गए कर्म श्राद्ध और जिस कर्म से माता, पिता और आचार्य तृप्त हो वह तर्पण है। यह श्राद्ध–तर्पण ही पितृ यज्ञ कहलाता है। तर्पण का अर्थ है तृप्त करना, सुख देना; श्राद्ध का अर्थ है श्रद्धा से सेवा करना, प्रेमपूर्वक व्यवहार से उनको सुखी रखना। वेदानुसार यह श्राद्ध–तर्पण हमारे पूर्वजों, माता–पिता और आचार्य के प्रति सम्मान का भाव है। जीवित माता–पिता तथा गुरुजनों और अन्य बड़ों की सेवा एवं आज्ञा–पालन करना भी पितृयज्ञ है। इसी से 'पितृ ऋण' भी चुकता होता है। इसके फलस्वरूप, गुरुजनों की कृपा व आशीर्वाद से, हमारे ज्ञान और गुणों में वृद्धि होती है, हमें आयु, बल व यश प्राप्त होते हैं ।

वैश्वदेवयज्ञ

इसे भूत यज्ञ भी कहते हैं। पंच महाभूत से ही मानव शरीर है। सभी प्राणियों तथा वृक्षों के प्रति करुणा और कर्त्तव्य समझना उन्हें अन्न–जल देना ही भूत यज्ञ या वैश्वदेव यज्ञ कहलाता है। महर्षि दयानंद सरस्वती [21] के अनुसार जो कुछ भी भोजन कक्ष में भोजन पकाया गया हो उसमें से खट्टा, नमकीन, और क्षार को छोड़कर, घृत मिष्ठान युक्त अन्न का उसी अग्नि में होम करना, या फिर कुछ अंश गाय, कुत्ते और कौवे को देना वैश्वदेव यज्ञ है। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य [22] ने अग्नि में होम करने की इस प्रक्रिया को बलिवैश्य यज्ञ कहा है। जिस प्रकार जीवन में कई अवसरों पर हमसे हीनतर प्राणी भी हमपर उपकार करते हैं, इसलिए हमें भी उनका उपकार करना चाहिए, यही इस यज्ञ का आशय है । भूतयज्ञ का यह उद्देश्य उपनिषद् के सर्वे भवन्तु सुखिन: वाक्य में ही सन्निहित है।

अतिथि/नृ यज्ञ

तैत्तिरीय ब्राह्मण [23] में कहा गया है अतिथि अर्थात मेहमानों की सेवा करना उन्हें अन्न–जल देना; अपंग, महिला, विद्या–र्थी, चिकित्सक और धर्म के रक्षकों की सेवा–सहायता करना, विद्वान, धर्मात्मा, संन्यासी, संत–महात्माओं का भोजन आदि से सत्कार करके उनसे ज्ञानप्राप्ति करना ही अतिथि यज्ञ है। इससे संन्यास आश्रम पुष्ट होता है, यही सामाजिक कर्त्तव्य है।

चर्चा

मनु [24] यह भी कहते हैं कि इन पञ्च महायज्ञ में, ब्रह्म और दैव यज्ञ सबसे महत्त्वपूर्ण हैं। ब्रह्मयज्ञ हमें पठन पाठन और स्वाध्याय के द्वारा प्रतिदिन के मलिन विचारों से मुक्त करता है, और दैवयज्ञ सत्संगति अग्निहोत्र और गायत्री की साधना से हमारे वातावरण की मलिनता दूर करता है। दूसरे यज्ञ छूट भी जाएं, फिर भी इन दो यज्ञों को हमें यथाशक्ति करते रहना चाहिए ।

भारतीय ऋषियों ने जीवन भर यज्ञ के दर्शन में प्रतिबिंबित समर्पण, देने का भाव और उदारता का प्रदर्शन किया है। उन्होंने दिखाया कि पूरा जीवन यज्ञ है यानी स्वयं के लिए नहीं बल्कि दूसरों के उत्थान के लिए। दुनिया के सभी महान आध्यात्मिक व्यक्तित्वों ने अपने जीवन में यह उपदेश दिया है कि वे दूसरों के कल्याण के लिए निस्वार्थ और उदारतापूर्वक जीवन जीते हैं। यही भावना पञ्च महायज्ञ के भावों को जीवन व्यवहार में लाकर पाया जा सकता है।

उपसंहार

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि ये पञ्च महायज्ञ मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं का श्रेष्ठ समाधान है जो कि किसी न किसी प्रत्युपकार से जुड़े हैं। और यदि अध्यात्मिक परामर्श–दाता मनुष्य के मन के विकारो को पञ्च महायज्ञ के इन प्रेरणाओं के माध्यम से परामर्श करे तो निश्चित ही हमारे जीवन में संतुलन स्थापित करने में आध्यात्मिक परामर्श मदद कर सकता है।

Compliance with ethical standards Not required.

Conflict of interest The authors declare that they have no conflict of interest.

सन्दर्भ

[1] सायण भाष्य, शतपथ ब्राह्मण, नाग प्रकाशक, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वा–राणसी, 1964।

[2] सिह, डॉ रमा और मिश्र, डॉ मुकेश कुमार, International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(6): 273–279 ISSN: 2394–7519. Available from: anantaajournal.com.

[3] सरस्वती, महर्षि दयानन्द, सत्यार्थप्रकाश, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली, 2015 पृ. 85– 86

[4] शर्मा पं. श्रीराम, गायत्री यज्ञ का महत्त्व, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा [Internet]. [cited 2024 Jan 31]. Available from: awgp.org.

[5] शर्मा पं. श्रीराम, यज्ञ का ज्ञान–विज्ञान, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 1998 पृ. 4.11

[6] इंडियन वेदा, पञ्च महायज्ञ, मनुस्मृति 3/68 [Internet]. [cited 2024 March 4]. Available from: IndianVedas.net 30/1/2024.

[7] जोशी, योगेन्द्र, विचार संकलन ब्लॉग, 'शुक्लयजुर्वेदसंहिता, अध्याय 32, कं–डिका/मंत्र 13–16' वाराणसी, 24 जनवरी 2018

[8] Narayani and Shurjo, Ananda Sangha Mumbai Experience Power of Spiritual Counselling [Internet]. [cited 2024 March 4]. Available from: anandamumbai.org

[9] प्रवीण, परामर्श क्या है ? अर्थ, प्रकृति, आवश्यकता, एवं सिद्धांत [Internet]. [cited 2024 March 4]. Available from: praveeneducation.com

[10] NCERT मानव पारिस्थितिकी और परिवार विज्ञान भाग 1 मार्गदर्शन एवं परामर्श पृ. 154–155 [Internet]. [cited 2024 March 4]. Available from: ncert.nic.in

[11] Pandya P. Reviving the Vedic Culture of Yagya. 2nd ed. Shantikunj, Haridwar, India: Shri Vedmata Gayatri Trust,; 2009

[12] Sharma S. Form and Spirit of Vedic Ritual Worship: Procedure of Yagya. Revised. Mathura, India: Yug Nirman Yojana Vistar Trust, Gayatri Tapobhumi; 2011. [Internet]. [cited 2024 March 4]. Available from: awgp.org

[13] Bleecker, Karin. New Life Portugal A Guide to Spiritual Counselling October 31, 2021 [Internet]. [cited 2024 March 2]. Available from: newlifeportugal.com

[14] Grace.Being, What Is Spiritual Counseling? [Internet]. [cited 2024 Jan 31]. Available from: grace–being.com

[15] Antahkarana, spiritual solutions centre Spiritual Counselling [Internet]. [cited 2024 March 2]. Available from: spiritualsolutionscentre.org

[16] Grace.Being, What Is Spiritual Counseling? [Internet]. [cited 2024 Jan 31]. Available from: grace–being.com

[17] भट्ट, चंद्रशेखर, पञ्च महायज्ञ विवेचन Himalayan J Soc. Sci & Humanities Vol. 11, (2016) Pp 79–84 ISSN: 0975–9891 Available from: hjssh.sharadpauri.org

[18] दीप, अरुण कुमार, वेदों में पञ्च महायज्ञ विधान International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 265–269 ISSN: 2394–7519 Available from: anantaajournal.com

[19] सायण भाष्य शतपथ ब्राह्मण, नाग प्रकाशक, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 1964।

[20] राय, डॉ गंगा सागर, याज्ञवल्क्य स्मृति मिताक्षरा टीका सहित, (हि०अनु०) चौखम्बा संस्कृत सीरीज, दिल्ली 2007।

[21] सरस्वती, महर्षि दयानन्द, सत्यार्थप्रकाश, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली, 2015 पृ. 85– 86

[22] शर्मा पं. श्रीराम, यज्ञ का ज्ञान–विज्ञान, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 1998 पृ. 4.11

[23] सायण भाष्य तैतरीय ब्राह्मण सम्पादक प्रो पुष्पेन्द्र कुमार, नाग प्रकाशक, दिल्ली, 1998।

[24] अखंड ज्योति 1942 जून available from: awgp.org.